राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
बिहार लोक भवन, पटना–800022

संख्या–198/2026

प्रेस–विज्ञप्ति

विदेश नीति और कूटनीति राष्ट्रीय विकास की महत्वपूर्ण आधारशिला– सरदार तरनजीत सिंह संधू

- **बदलते वैश्विक परिवेश में विदेश नीति की भूमिका बाजार, निवेश, तकनीक और रोजगार के अवसरों तक विस्तृत– सरदार संधू**
- **विकसित भारत के लिए आर्थिक विकास के साथ वैश्विक स्तर पर भारत की मजबूत स्थिति भी आवश्यक– राज्यपाल**
- **विदेश नीति और कूटनीति के प्रति व्यापक जन–जागरूकता समय की आवश्यकता– राज्यपाल**

पटना 27 सितम्बर, 2026 :– दिल्ली के माननीय उप राज्यपाल सरदार तरनजीत सिंह संधू ने बिहार लोक भवन में पाटलिपुत्र प्रज्ञा प्रवाह श्रृंखला के अंतर्गत ''कूटनीतिः विकसित भारत के संकल्प को गति देने वाली शक्ति'' विषय पर व्याख्यान दिया।

उन्होंने कहा कि आज के परस्पर जुड़े वैश्विक परिवेश में विदेश नीति केवल राजनीतिक एवं सामरिक संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह निवेश आकर्षित करने, नए बाजारों तक पहुँच बनाने, तकनीक हासिल करने, आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने तथा रोजगार के अवसर सृजित करने का महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

उन्होंने कहा कि भारत की विदेश नीति का मूल आधार राष्ट्रीय हित है और बदलते समय में राष्ट्रीय हित का दायरा आर्थिक विकास, तकनीकी क्षमता और मानव संसाधन के विकास तक विस्तृत हुआ है। यह भारत के विकसित भारत के संकल्प के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

श्री संधू ने भारत–अमेरिका संबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि दोनों देशों के बीच सहयोग अब सेमीकंडक्टर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, अंतरिक्ष, रक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, शिक्षा और उन्नत विनिर्माण जैसे क्षेत्रों तक विस्तृत हो गया है। उन्होंने कहा कि ऐसे अंतरराष्ट्रीय सहयोग का उद्देश्य निवेश प्राप्त करने के साथ–साथ देश में विनिर्माण, अनुसंधान, कौशल और तकनीकी क्षमताओं को मजबूत करना होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ अधिक मजबूती से जुड़ते हुए अपनी घरेलू क्षमताओं और आपूर्ति श्रृंखलाओं को भी सुदृढ़ करना होगा। अंतरराष्ट्रीय साझेदारियाँ अवसर उपलब्ध कराती हैं, लेकिन उन्हें विकास में बदलने के लिए बेहतर बुनियादी ढाँचे, कुशल मानव संसाधन, सक्षम संस्थानों और अनुकूल कारोबारी वातावरण की आवश्यकता होती है।

आगे पृष्ठ 2 पर.....

श्री संधू ने कहा कि भारत अब केवल दुनिया से पूँजी, तकनीक और ज्ञान प्राप्त करने वाला देश नहीं है, बल्कि डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर, अंतरिक्ष तकनीक, डिजिटल भुगतान, स्टार्टअप और सार्वजनिक सेवा वितरण के क्षेत्र में अपने अनुभव एवं क्षमताओं को भी विश्व के साथ साझा कर रहा है।

उन्होंने कहा कि विदेश नीति की सफलता का वास्तविक आकलन इस बात से होना चाहिए कि वह देश की घरेलू क्षमताओं को कितना मजबूत करती है। जब विदेश नीति और घरेलू क्षमता साथ–साथ आगे बढ़ती हैं, तब कूटनीति राष्ट्रीय विकास और विकसित भारत के निर्माण की महत्वपूर्ण शक्ति बन जाती है।

इससे पहले अपने विशेष संबोधन में माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल सय्यद अता हसनैन (सेवानिवृत्त) ने कहा कि 'विकसित भारत' का अर्थ सिर्फ आर्थिक विकास, शिक्षा, तकनीक और बेहतर आधारभूत सुविधाएँ नहीं है, बल्कि दुनिया में भारत की मजबूत स्थिति और अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि भारत के तेजी से आगे बढ़ने के साथ कूटनीति की भूमिका भी बढ़ेगी। आज कूटनीति केवल देशों के बीच राजनीतिक संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि बाजार, निवेश, तकनीक, ऊर्जा, व्यापार, रक्षा सहयोग और भारतीय प्रतिभाओं के लिए दुनिया में नए अवसर सुनिश्चित करने में भी इसकी अहम भूमिका है।

राज्यपाल ने कहा कि विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की समझ केवल विशेषज्ञों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। वैश्विक घटनाक्रम का सीधा प्रभाव भारत और राज्यों की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है। उन्होंने बिहार के मखाना व्यापार का उदाहरण देते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय घटनाओं और व्यापारिक मार्गों में होने वाले बदलाव का स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता है। उन्होंने विदेश नीति और कूटनीति के विषय में व्यापक जन–जागरूकता को 'विकसित भारत' की दिशा में महत्वपूर्ण बताया।

व्याख्यान के बाद प्रश्नोत्तर सत्र के दौरान विभिन्न लोगों ने विषय से जुड़े प्रश्न भी पूछे जिनका सरदार तरनजीत सिंह संधू ने यथोचित उत्तर दिया।

इस अवसर पर लेडी गवर्नर श्रीमती सबीहा हसनैन, राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री दीपक कुमार सिंह, शिक्षकगण, विद्यार्थीगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण व कर्मीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

.....